महत्वपूर्ण सुधारक →

सुधार आन्दोलन की प्रक्रिया बंगाल से आरंभ हुई। इसलिए बंगाल की तुलना इटली से भी की जाती है। दूसरे शब्दों में जिस प्रकार यूरोपीय पुनर्जागरण इटली से आरंभ हुआ, उसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण बंगाल से आरम्भ हुआ

राजाराम मोहन राय → समाज एवं धर्म सुधार आन्दोलन की प्रक्रिया बंगाल में राजा राम मोहन राय के साथ आरंभ हुई। उन्होंने सर्वप्रथम कलकत्ता में आत्मीय सभा की स्थापना की तथा फिर समाज सुधार आंदोलन आरंभ किया। धर्म सुधार के क्रम में उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा एकेश्वरवाद को प्रोत्साहन दिया। 1829 में उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की। समाज सुधार के क्रम में उन्होंने सती प्रथा का घोर विरोध किया। राजा राम मोहन राय का मूल्यांकन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक होगा।

→ राजा राम मोहन राय के व्यक्तित्व पर एक से अधिक प्रभावों का प्रभाव रहा था। सर्वप्रथम हिन्दू बौद्ध विचारों का प्रभाव तदुपरांत अरबी फारसी संस्कृति का प्रभाव पड़ा तथा अंततः पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव उभर कर सामने आया।

→ राजा राम मोहन राय के व्यक्तित्व पर पाश्चात्य तत्वों के साथ-साथ भारतीय तत्वों का भी प्रभाव था। यदि उनपर ईसाई एकेश्वरवाद का प्रभाव था तो फिर उनका एकेश्वरवाद अद्वैतवाद से भी प्रभावित था। वे वेद एवं उपनिषद की श्रेष्ठता को भी मानते थे। एक तरफ राजा राम मोहन राय ने पाश्चात्य तत्वों को ग्रहण किया तो दूसरी तरफ अपने स्वदेशी संस्कारों को भी नहीं छोड़ा। कहा जाता है कि कलकत्ता में उनके दो मकान थे। एक मकान में वे भारतीयों से मिलते जहाँ वे एकमात्र यूरोपीय होते तथा एक मकान में यूरोपीयों से मिलते जहाँ वे एकमात्र भारतीय होते थे।

→ राजा राम मोहन राय को आधुनिक राष्ट्रवाद का जनक भी कहा जाता है क्योंकि इन्हीं के साथ 19वीं सदी के भारत में सुधारों की प्रक्रिया आरंभ हुई और इन सुधारों के पश्चात भारत आधुनिक राष्ट्र के रूप में संगठित हुआ

→ राजा राम मोहन राय के पश्चात ब्रह्म समाज आंदोलन दो धाराओं में बँट गया - एक धारा रेडिकल की जिसका प्रतिनिधित्व केशव चन्द्र सेन कर रहे थे तो दूसरी धारा परम्परावादी की जिसका प्रतिनिधित्व देवेन्द्र नाथ टैगोर कर रहे थे।

Scanned by CamScanner

यंग बंगाल आंदोलन→

बंगाल में सुधार की धारा को आगे बढ़ाने में यंग बंगाल आंदोलन ने अहम भूमिका निभाई। इसके संस्थापक हेनरी विवियन डेरोजियो थे जिन्होंने अपने इर्द-गिर्द बंगाल के रेडिकल युवाओं को संगठित किया।

सबल पक्ष→ यंग बंगाल आंदोलन में राष्ट्रवाद एवं धर्मनिरपेक्षता को प्रोत्साहन दिया। डेरोजियो को भारत का प्रथम राष्ट्रीय कवि माना जाता था। यंग बंगाल आन्दोलन से जुड़े नेताओं ने धर्म और परम्परा से अपना संपर्क विच्छेदित कर लिया तथा धर्मनिरपेक्षता को बल प्रदान किया।

निर्बल पक्ष→ अपने आप को रेडिकल रूप में प्रस्तुत करने के उत्साह में यंग बंगाल के आन्दोलन के नेताओं ने गो मांस भक्षण और खुले रूप में मदिरापान करने लगे। यहाँ तक कि देवी काली को उन्होंने मैडम के नाम से संबोधित करना शुरू किया। जैसा कि हाल ही में एक प्रसिद्ध विद्वान एरिक हाब्सबाम ने अपनी एक पुस्तक 'फेक्चर्ड टाइम' में स्पष्ट किया कि बंगाल में कम्युनिस्ट पार्टी हो या दीदी की पार्टी, देवी काली का विरोध कर वहाँ जीवित नहीं रह सकती। स्वाभाविक रूप से यह बात यंग बंगाल आन्दोलन पर भी लागू होती है अर्थात यंग बंगाल आन्दोलन को बंगाली समाज में स्वीकृति नहीं मिली तथा वह निष्प्रभावी हो गया।

Scanned by CamScanner

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर →

यदि एक तरह से देखा जाये तो बंगाल में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने राजा राम मोहन राय के अधूरे कार्यों को पूरा किया। वस्तुतः विधवा पुनर्विवाह सती प्रथा उन्मूलन का स्वाभाविक परिणाम था। विद्या सागर ने स्त्री शिक्षा एवं विधवा पुनर्विवाह के क्षेत्र में अहम योगदान दिया। उनके प्रयासों के परिणाम स्वरूप 35 बालिका विद्यालयों की स्थापना हुई। उसी प्रकार उनके प्रयासों से 1856 में विधवा पुनर्विवाह कानून पारित हुआ।

बंकिम चन्द्र चटर्जी →

बंकिम चन्द्र चटर्जी भारतीय राष्ट्रवाद के आरंभिक प्रणेताओं में से थे। वे भारतीय संस्कृति के महान उद्गाता थे, जो उनके आनन्द मठ नामक पुस्तक में अभिव्यक्त हुआ है। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने बंगाली में भगवद्गीता का अनुवाद किया। (जर्मनी में धर्मसुधार आंदोलन के क्रम में मार्टिन लूथर ने बाइबिल का जर्मन में अनुवाद किया। किसी भी धर्म सुधार आन्दोलन के क्रम में यह विशेष तत्व होता है)

→ दूसरी तरफ वे पश्चिम की भौतिक समृद्धि के बड़े प्रशंसक भी थे। वे इस तथ्य को स्वीकार करते थे कि भौतिक संसाधनों में पश्चिम हमसे कहीं आगे है तथा अपने इन्हीं भौतिक संसाधनों के बल पर पश्चिम हम पर शासन कर सका है, इसलिये हमें भी भौतिक संसाधनों को बढ़ाने के लिये प्रयास करते रहना चाहिये। किंतु दूसरी तरफ बंकिम चन्द्र को अपने महान सांस्कृतिक धरोहर पर गर्व था और वे मानते थे कि सांस्कृतिक समृद्धि में पश्चिम निश्चय ही हमसे पीछे है।

Scanned by CamScanner

स्वामी विवेकानन्द →

• स्वामी विवेकानन्द महान विचारक, नववेदान्तवादी, प्रजातान्त्रिक एवं समाजवादी भी थे।

→ विवेकानन्द का मानना था कि भारत के उत्थान के लिये सामाजिक, साम्प्रदायिक एवं क्षेत्रीय विभाजन का अन्त करना आवश्यक है। वे धर्म को भारतीय संस्कृति की मूल धरोहर मानते हैं जिसे संजोकर रखने की जरूरत है परन्तु वहीं वे धार्मिक कर्मकाण्ड के विरोधी हैं। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "हमारा धर्म रसोईघर में है तथा हमारे देवता रसोईघर के बर्तन बनाने वाले बर्तनों में। यदि कुछ समय तक हमारी यह स्थिति रही तो वह दिन दूर नहीं कि हम सब पागलखाने में होंगे।

→ स्वामी विवेकानन्द व्यावहारिक वेदान्तवादी इसलिये कहे जाते हैं क्योंकि उनके ब्रह्म अगम, अगोचर नहीं हैं अपितु वे ब्रह्म का साक्षात्कार करोड़ों भूखे, नंगे और पीड़ित मानव में करते हैं। इसी सन्दर्भ में उन्होंने दरिद्र नारायण की अवधारणा दी। उनका वेदान्त भी व्यावहारिक वेदान्त कहा जाता है।2

→ विवेकानन्द यह मानते हैं कि न केवल भारत अपितु विश्व के अन्य क्षेत्र भी चार वर्णों में विभाजित हैं - सबसे पहले सत्ता ब्राह्मणों के हाथों में आई थी, किन्तु शीघ्र ही कुलीन एवं योद्धाओं ने उन बुद्धिजीवियों से सत्ता छीन ली। इन्हें हम क्षत्रिय कह सकते हैं। तदुपरांत सत्ता व्यापारी एवं उद्यमियों के हाथों में चली गयी, इसकी पहचान वैश्य से की जा सकती है। ब्रिटेन में भी व्यापारियों का शासन है। किन्तु साथ ही विवेकानन्द का यह भी मानना था कि शीघ्र ही यह सत्ता बहुसंख्यक शूद्रों के हाथों में आ जायेगी। यह बहुसंख्यक शूद्र श्रमिक हैं। इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द के विचारों में समाजवाद का तत्व भी मिलने लगता है।

Scanned by CamScanner